JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मऊगंज जिले में पर्यटन विकास की सम्भावनाएँ व पर्यावरणीय प्रभाव

▪ डॉ. इन्द्रमणि कुशवाहा, विजिटिंग फैकल्टी, भूगोल विभाग
रानी अवन्तीबाई लोधी राजकीय विश्वविद्यालय सागर (म0प्र0)

शोध सारांश

आज न केवल भारत बल्कि संपूर्ण विश्व की नजर पर्यटन उद्योग को विकसित करने में लगी हुई है। क्योंकि इससे देश की अर्थव्यवस्था को गति देने व देश में बेरोजगारी जैसे समस्या के निदान करने में प्रयुक्त किया जा सकता है। हमारे देश में पर्यटन जहां एक ओर सामाजिक और आर्थिक लाभ का स्रोत है और राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय मेल मिलाप को बढ़ावा देता है, वहीं दूसरी ओर इससे संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में शानदार कैरियर के अवसर भी उपलब्ध हैं।

यद्यपि पर्यटन की दृष्टि से भारत बहुत संभावना पूर्ण राष्ट्र है, परंतु विश्व पर्यटन की तुलना में यह देश आपेक्षित प्रगति नहीं कर पाता है। भारत में पर्यटन के इतने आकर्षक होते हुए भी न तो पर्यटकों की संख्या में विशेष बढ़ोतरी हुई है और न ही विदेशी मुद्रा अर्जन में विशेष वृद्धि हो पाई है। जबकि भारत एक विशाल देश है। यहां की विविधताएं एवं विभिन्नताएं अपने आप में अन्य देशों में लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बिंदु है। इस तरह विश्व पर्यटन मानचित्र में भारत के महत्वपूर्ण स्थित है।

मुख्य शब्दः—पर्यटन, विकास, फोटोग्राफ, जलप्रपात, पर्यावरण।

भूमिका

आदिकाल से लेकर आज तक जब से मानव जाति ने धरती पर जन्म लिया है, तब से मानव भ्रमण शील रहा है। प्रकृति ने समय तथा काल के अनुसार मानव को भ्रमण करने के लिए बाध्य किया है। भू दृश्य निहित प्राकृतिक, सांस्कृतिक, विविधता तथा ग्रामीण रीति—रिवाज, सम्बंधित आकर्षण, पर्यटन की आधार शिला है। यहीं तत्व मानव प्रेरणा के स्रोत होते हैं। जिससे पर्यटन का जन्म एवं विकास होता है। मानव स्वभाव से ही जिज्ञासु होता है और अपनी इस जिज्ञासा की पूर्ति हेतु न केवल अपने दायरे या देश तक सीमित रहता है, अपितु अपने देश से बाहर देखने व परखने की लालसा भी इसके अंदर बनी रहती है, जो इसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इसी स्वाभाविक प्रवृत्ति एवं लालसा का ही प्रतिफल अर्थात क्रियात्मक रूप है। पर्यटन, पर्यटन का सामान्य अर्थ सुविधानुसार या अवकाश के क्षणों में दृश्य सौन्दर्य

स्थलों को थोड़ी समय के लिए भ्रमण करना है। पर्यटन के लिए पर्यटक का उद्देश्य **मनोरंजन करना, छुट्टी मनाना, स्वस्थ लाभ, ज्ञानवर्धन, धार्मिक उद्देश्य, खेलकूद** का शैक्षणिक व फोटोग्राफ करना किसी भी रूप में हो सकता है। कहा जाता है कि पर्यटन की प्रक्रिया, मानव की उत्पत्ति के साथ सम्बद्ध है। पर्यटन को मानव की जन्मजात प्रवृत्ति माना जाता है। मानव सभ्यता एवं मानव प्रकृति के साथ यह विकास सदा सामंजस्य को बनाये रखता है।

Tourism शब्द की उत्पत्ति Tourist से एवं Tourist शब्द की उत्पत्ति Tour शब्द से मानी जाती है Tour शब्द की उत्पत्ति Tourns शब्द से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ घूमने वाला चक्र होता है। 17वीं सदी के आस पास इस शब्द का प्रयोग एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने (यात्रा) के लिए किया जाने लगा। किंतु वर्तमान में पर्यटक शब्द का प्रयोग बहुधा प्राप्ति के उद्देश्य से किये गए यात्रा को माना जाता है। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात पर्यटन उद्योग एक महत्वपूर्ण एवं उदीयमान उद्योग माना जाने लगा है।

प्राकृतिक प्रदत्त अनुकूल परिस्थितियों को देखते हुए अपने देश के हृदय में स्थित मध्य प्रदेश का विंध्य क्षेत्र (मऊगंज जिला) को एक आदर्श पर्यटन स्थल होना चाहिए था, किंतु कई कारणों से ऐसा नहीं हुआ। यदि कई क्षेत्रों में अस्थिरता इसके लिए जिम्मेदार रहीं, तो कही पर्यटन के लिए आवश्यक बुनियादी सेवाओं का अभाव, कहीं कई पर्यटक स्थलों की पहचान न हो सकना कहीं विदेशों में फैली हमारे बारे में प्रचलित भ्रांतियां भी आड़े आती है। पर्यटन उद्योग न केवल बढ़ती मात्रा में विदेशी मुद्रा अर्जित करने और रोजगार के नए अवसर जुटाने में कारगर है, बल्कि इसके जरिए सही अर्थों में सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा मिलता है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

मऊगंज जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 1866.88 वर्ग किमी. है। यह जिला 24°68′N अक्षांश और 81°88′E देशान्तर पर स्थित है। यह जिला उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिला और मिर्जापुर जिला के साथ अपनी सीमा साझा करता है। मऊगंज जिले की कुल जनसंख्या 6,16,645 है। जिले की साक्षरता दर 71.31 प्रतिशत है। जिसमें पुरूष साक्षरता दर 80.83 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता दर लगभग 61.27 प्रतिशत है। मऊगंज मध्यप्रदेश का 53 वाँ नया जिला (रीवा से अलग होकर) है, जो आधारिक रूप तौर पर 15 अगस्त 2023 को अस्तित्व में आया। नवगठित मऊगंज जिले का कुल क्षेत्रफल लगभग 1866.88 वर्ग किमी. है। इस जिले में मुख्य रूप से चार तहसीलें शामिल हैं– **मऊगंज, नईगढ़ी, देवतालाब और हनुमना**। यह जिला उत्तरप्रदेश की सीमा से लगा हुआ है, जो इसे रणनीतिक स्थिति प्रदान करता है। मऊगंज जिला वर्तमान में परिवहन सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। सड़क मार्ग **सीधी, रीवा, सतना, प्रयागराज** एवं **बनारस–मिर्जापुर राष्ट्रीय राजमार्ग** से सीधे जुड़ा हुआ है। वहीं वायु मार्ग निकटम एयरपोर्ट **रीवा, जबलपुर, सतना एवं प्रयागराज** से जुड़ा हुआ है। अपनी प्राकृतिक सुन्दरता, ऐतिहासिक धरोहरों और

धार्मिक स्थलों के कारण पर्यटन के क्षेत्र में तेजी से उभर रहा है। यह विध्य क्षेत्र में स्थित है। मऊगंज जिला अपनी धार्मिक संस्कृति और मनोरम सुंदर झरनों के लिए प्रसिद्ध है।

अध्ययन क्षेत्र का उद्देश्यः—

- पर्यटन के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती देना और क्षेत्र में नए निवेश को आकर्षित करना।
- स्थानीय युवाओं के लिए गाइड, होटल व्यवसाय, परिवहन और हस्तशिल्प के क्षेत्र में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर पैदा करना।
- मध्यप्रदेश के सबसे ऊंचे जलप्रपात बहुती जलप्रपात, देवलहा जलप्रपात और अन्य प्राकृतिक स्थलों का संरक्षण करते हुए उन्हें सुरक्षित पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करना।
- देवतालाब के प्राचीन शिव मंदिर और नईगढ़ी किले जैसे ऐतिहासिक स्थलों को नई पहचान दिलाकर धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देना।
- पर्यटन के बहाने जिले में सड़कों, बिजली, पानी और बेहतर कनेक्टिविटी जैसी मूलभूत सुविधाओं का विस्तार करना।
- बघेली कला, संस्कृति, पारंपरिक भोजन और मेलों को अंतराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित करना।

साहित्य सामीक्षा

किसी भी वैज्ञानिक कार्य के लिए विषय से संबंधित सार्थक का पुनरावलोकन करना आवश्यक हैं। शोध के पुनरावलोकन द्वारा अध्ययन की जाने वाली समस्या, अवधारणाएं आदि को स्पष्ट करने में सहायक होता है। साहित्य के पुनरावलोकन द्वारा शोधकर्ता के विषय से संबंधित उपलब्ध जानकारी प्राप्त होती है। किसी प्रकृति का कितनी गहराई का तथा किस प्रकार का कार्य हो चुका है। इसकी जानकारी के आधार पर शोध कार्य भविष्य में दिशा निर्देश प्राप्त करता है। साहित्य के पुनरावलोकन के अध्ययन से ही शोधकर्ता यह समझ पाता है, कि उसे किस प्रकार के तथा कितनी गहराई में अथवा किस विषय पर शोध कार्य करना चाहिए। अतः स्पष्ट है कि साहित्य का पुनरावलोकन शोध प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है। तथा उसके माध्यम से ही स्पष्ट एवं अर्थपूर्ण रूप रेखा तैयार की जा सकती है। इस प्रकार शोध उद्देश्य से शोधकर्ता ने विषय से संबंधित शोध कार्यों का पूर्ण अवलोकन किया है।

भूगोल एवं पर्यटन का अभिन्न संबंध सर्वविदित है। यद्यपि पर्यटन के आकर्षण से संबंधित अध्ययनों से भूगोल विषय भरा पड़ा है, किंतु पर्यटन केंद्रों के विकास, एवं संभावनाएं व समस्याओं पर बहुत कम साहित्य भूगोल विषय में उपलब्ध है। कुछ भूगोलवेत्ताओं एवं अन्य विषय विशेषज्ञों ने पर्यटन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण शोध कार्य किये हैं। यदि पर्यटन साहित्याओं का हम यहां उल्लेख करें तो उनमें ए. के भाटिया

(1983) का कार्य **''भारत में पर्यटन का इतिहास एव विकास''** एक महत्वपूर्ण कार्य हैं। उन्होंने अपने कार्य में भारतवर्ष में पर्यटन के ऐतिहासिक विकास पर प्रकाश डालते हुए पर्यटन के समस्त पहलुओं को स्पर्श किया है। उनका अध्ययन निश्चित ही हम लोगों को इस दिशा में अध्ययन के लिए प्रेरणा स्रोत सिद्ध हुआ है। एफ. आर आलचिन का ''कल्चरल टूरिज्म इन इंडिया ईट्रस् स्कोप एंड डेवलपमेंट'' भारत सरकार, पर्यटन विभाग नई दिल्ली, इसी दिशा में किया गया एक महत्वपूर्ण कार्य है। इस कार्य ने सांस्कृतिक पर्यटन क्षेत्र में एक नई सोच विकसित करने का कार्य किया है। इसी कड़ी में अन्य कार्यों में बुरकत ने ए. जे एवं मेडलिक एस. का ''टूरिज्म पास्ट, प्रेजेंट एंड फ्यूचर'' चोपड़ा, एस. का **''टूरिज्म एंड डेवलपमेंट इन इंडिया,''** दत्तातार बी. एन का ''हिमालयन पिलग्रीमेज'' लतीफ मोहम्मद का ''आगरा'' मेडलिक, एस. का **''दि इकोनामिक इंपोर्टेंट ऑफ़ टूरिज्म''** नैनीताल, जी. पी. (1962) कॉल ऑफ बद्रीनाथ'' ए नेगी जे. एस, का ''पर्वतों का स्वर्ग उत्तराखंड'' पुरी, बी. एन. का ''सीरीज ऑफ'' एनिसेंट इंडिया'' सेठ, पी. एन का ''सक्सेसफुल टूरिज्म प्लैनिंग एंड मैनेजमेंट'' सिंह. टी. वी (1968) का ''प्रास्पेक्टस ऑफ टूरिज्म इंडस्ट्री ऑफ इंडिया'' पर्यटन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य है। गुप्ता देशबंधु (1983) ने पर्यटन का रोजगार एवं आय पर प्रभाव, अरोरा, कृष्ण कुमार ने ''कुमाऊं पर्यटन उद्योग'' पर विस्तृत अध्ययन किया हैं। जस वीर सिंह कौर (1985) का ''Himalayan pilgrimage and new tourism" शालिनी सिंह (1972) का ''Cultural tourism in awadh region" सिंह, सुमंत (1997) का रीवा पठार में पर्यटन उद्योग के विकास की संभावनाएं। सिंह. बी.पी. एव सिंह सुमंत (1999) का पर्यावरणीय विविधताएं एवं पर्यटन। सिंह बी.पी., (2004) का मध्य प्रदेश में पर्यटन विकास समस्याएं एव संभावनाएं। प्रजापति, शिवमूरत ''विन्ध्य प्रदेश में वन्य जीव क्षेत्र एवं पर्यटन'' भू पर्यावरणीय अध्ययन। इस क्षेत्र में किए गए महत्वपूर्ण कार्य हैं।

शोध प्रविधि

इस भौगोलिक अध्ययन में हम भौगोलिक तथा सामाजिक अध्ययन की विधि का प्रयोग किया जाएगा। स्थानीय लोगों से साक्षारता, आर्थिक स्तर और सामाजिक परिप्रेक्ष्य से संबंधित आंकड़े जुटाए जाएंगे। समय के साथ–साथ भौगोलिक तथा आर्थिक स्वरूप की अनुसंधानित की जाएगी। इसके लिए हम समुदाय के सदस्यों के साथ साक्षात्कार करेंगे और उनसे जानकारी प्राप्त करेंगे। साथ ही स्थानीय व्यापारों, होटलों, और अन्य पर्यटन संबंधित स्थलों के धारा प्रवाह की जांच करने के लिए भौगोलिक तथा आर्थिक रूप से विश्लेषण किया गया है।

समंको का संकलनः–समंक संकलन से तात्पर्य संख्यात्मक तथ्य के संग्रहण से है। अनुसंधान योजना बना लेने के पश्चात उपर्युक्त विधि द्वारा समंको को एकत्रित करने का कार्य किया जाता है। समंको के संकलन में काफी सावधानी की आवश्यकता होती है। क्योंकि यदि समंक संकलन में कोई दोष या त्रुटि रह जाती है, तो यह पूरे अनुसंधान को प्रभावित करता है। तथा निष्कर्ष भी अशुद्ध निकलता है। समंक मुख्य रुप से दो प्रकार के होते हैं।

(A) **प्राथमिक समंकः**—प्राथमिक समंक वह मौलिक समंक होते हैं, जिन्हें अनुसंधानकर्ता पहली बार अपने उद्देश्य के लिए एकत्रित करता है, तथा उसमें शुद्धता का उच्च स्तर पाया जाता है, क्योंकि समंक अनुसंधानकर्ता द्वारा स्वयं एकत्रित किए जाते हैं।

(B) **द्वितीयक समंकः**—द्वितीयक समंक वे समंक होते हैं, जिन्हें अनुसंधानकर्ता पूर्व में प्रकाशित स्रोतों या अन्य पत्र पत्रिकाओं से उपयोग में लेता है। द्वितीयक समंक पूर्व में किसी अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा अपने उद्देश्य के लिए एकत्र किए जाते हैं। किंतु उनका उपयोग किसी अन्य व्यक्ति द्वारा पुनः अपने—अपने उद्देश्य के लिए एकत्रित किया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र के प्रमुख पर्यटन स्थल

पर्यटन का पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव मुख्य रूप से प्राकृतिक स्थलों के संरक्षण, जैव विविधता की सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने में दिखता है। इससे प्राप्त राजस्व का उपयोग वनीकरण, वन्यजीव संरक्षण और टिकाऊ को बढ़ावा देने के लिए किया जाता है, जो स्थानीय समुदायों को प्रकृति की रक्षा करने के लिए आर्थिक रूप से प्ररित करता है।

पर्यटन आर्थिक विकास, रोजगार सृजन और सांस्कृतिक आदान—प्रदान को बढ़ावा देता है, जिससे स्थानीय बुनियादी ढांचें में सुधार होता है। हालांकि, अत्यधिक पर्यटन से पर्यटन से पर्यावरण प्रदूषण, सांस्कृतिक पहचान का नुकसान, भीड़भाड़ और स्थानीय संसाधनों पर दबाव जैसे नकारात्मक प्रभाव भी पड़ते है।

- **बहुती जल प्रपातः**—इस जिले में स्थित बहुती जलप्रपात एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। यह जलप्रपात मऊगंज एवं कटरा मार्ग से जुड़ा हुआ है। यह मध्यप्रदेश का सबसे ऊँचा जलप्रपात (198 मीटर) है, जो सेलर नदी पर स्थित है। यह राज्य का सबसे ऊँचा झरना है। जो बीहड़ नदी की एक उपनदी है। यह एक प्रमुख आकर्षण का केन्द्र है, जहाँ घने जंगल प्राकृतिक दृश्यों के साथ दूधिया जलधारा गिरती है। यह मऊगंज घाटी के किनारे से निकलकर बिहड़ नदी में मिलती है, जो तमसा या टोंस नदी की सहायक नदी है।

चित्रः बहुती जलप्रपात

- **बेलऊहीं जलप्रपातः**—यह जलप्रपात मऊगंज जिले के शाहपुर थाना अंतर्गत ग्राम पंचायत बेलऊहीं में एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल जलप्रपात है। यह जिला मुख्यालय से लगभग 20 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जाना जाता है, लेकिन मानसून के बाद यहाँ सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। यह स्थान स्थानीय लोगों के लिए एक प्रमुख पिकनिक स्पॉट है। यह एक प्राकृतिक और प्रसिद्ध झरना है, जो घने जंगलों या चट्टानी इलाके से घिरा है।
- **नईगढ़ी किले का मुख्य इतिहासः**—नईगढ़ी किला मध्यप्रदेश के नवनिर्मित मऊगंज जिले में स्थित एक ऐतिहासिक मध्ययुगीन किला है, जिसे 14वीं शताब्दी में सेंगर बंश के राजा छत्रधारी सिंह ने बनवाया था। मऊगंज के पूर्व शासक (सेंगर) जब बाघेलाओं से हार गए, तो उन्होंने एक नया स्थान चुना और इस किले का निर्माण करवाया, इसलिए इसे **नईगढ़ी** कहा जाता है। **''नईगढ़ी''** का अर्थ है **'नया किला'**। यह किला अपने स्थापत्य, पास में स्थित देवतालाब शिव मंदिर और किले के अन्दर स्थित प्राचीन राम—जानकी मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण, यह स्थान अपने पुराने किलों के लिए जाना जाता है। इस किले में एक प्राचीन मंदिर है, जो माँ काली को समार्पित है। ग्यारहवीं शताब्दी में सेंगर राजपूत जालौन (उत्तर प्रदेश) से आकर इस क्षेत्र में बस गए और **'मऊ राज'** की स्थापना की। चौदहवीं शताब्दी में बघेलों ने मऊ पर हमला किया और सेंगरों को हराकर उनके किले(मऊ) को नष्ट कर दिया, जिसके बाद ही नईगढ़ी किले का निर्माण हुआ। यह किला सेंगर राजाओं की स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है।

- **माँ अष्टभुजा मंदिर एवं देवलहा जलप्रपातः–**यह मुख्यालय से 16 किमी. के दूरी पर स्थित है। यह मंदिर आस्था का केन्द्र है। इस मंदिर के समीप देवलहा जलप्रपात है, जो अपने प्राकृतिक सुंदरता के विख्यात है। यह मंदिर मऊगंज–कटरा मार्ग से जुड़ा हुआ है।
- **मऊगंज का किलाः–**ऐतिहासिक महत्व का स्थल, जो सेंगर राजपूत वंश के शासनकाल(11वीं शताब्दी) की याद दिलाता है। इस क्षेत्र पर कभी सेंगर वंश के राजपूतों का शासन था, और यह **'मऊ राज'** के नाम से जाना जाता था।
- **देवतालाब शिव मंदिरः–**यह मऊगंज मुख्यालय से लगभग 18 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह प्राचीन मंदिर शिव और पर्वती को समर्पित है। इस प्राचीन मंदिर परिक्षेत्र में प्रतिवर्ष सावन मास में मेला लगता है। यह प्राकृतिक सुन्दरता और धार्मिक आस्था का संगम है।
- **अन्य आकर्षक केन्द्रः–**गोरमा बांध, पादर बांध, देऊर कोठार बौद्ध स्तूप।

मऊगंज जिले में पर्यटन की प्रमुख समस्याएं निम्नलिखित हैः–

- **बुनियादी सुविधाओं का अभावः–**इस जिले के प्रमुख पर्यटन स्थ, विशेषकर बहुती जलप्रपात, में पर्यटकों के लिए पीने का पानी, शौचालय और पार्किंग जैसी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध नहीं है।
- **सुरक्षा एवं सामाजिक तत्वः–**बहुती जलप्रपात के आसपास सुरक्षा व्यवस्था न के बराबर है, जिससे पर्यटकों के साथ अप्रिय घटनाएं हो सकती हैं। वहां शराबियों और असामाजिक तत्वों का जमावड़ा रहता है।
- **पर्यटक भवनों की बदहलीः–**कई पर्यटक विश्राम गृह और रेस्ट हाउस खंडहर बन चुके हैं या उनकी मरम्मत नहीं हुई है।
- **कनेक्टिकविटी और खराब रास्तेः–**पर्यटन स्थलों तक पहुँचने वाली सड़कें खराब स्थिति में है, जो पर्यटकों के लिए पहुँच को मुश्किल बनाती है।
- **विकास कार्यों की धीमी गतिः–**मऊगंज जिला घोषित होने के बावजूद, बुनियादी ढांचा विकसित करने में देरी हो रही है।

पर्यटन के प्रमुख प्रभाव निम्नलिखित हैः–

सकारात्मक प्रभाव

- **पर्यावरण जागरूकता और शिक्षाः–** पर्यटक जब प्राकृतिक और ऐतिहासिक स्थलों का दौरा करते है, तो वे पर्यावरण के महत्व को समझते है, जिससे पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ती है।

- **स्थानीय समुदायों के लिए रोजगारः–**पर्यटन स्थानीय व्यवसायो (होटल, रेस्तरां, परिवहन) को बढ़ावा देता है। पर्यटन प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के अवसर प्रदान करता है। पर्यावरण अनुकूल पर्यटन के कारण स्थानीय लोग शिकार या अवैध कटाई जैसे हानिकारक कार्यों के बजाय पर्यटन आधारित गतिविधियों में शामिल होकर अपनी आजीविका कमाते हैं, जो जैव विविधता की रक्षा करता है।
- **पर्यावरण अनुकूल बुनियादी ढांचे में सुधारः–** लोकप्रिय पर्यटन स्थलों पर बेहतर अपशिष्ट प्रबंधन, स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग और स्वच्छता सुविधाओं का विकास किया जाता है, जिससे स्थानीय पर्यावरण में सुधार होता है। पर्यटकों की सुविधा के लिए सड़कों, हवाई अडडों, बिजली और संचार जैसी सुविधाओं का विकास होता है, जिससे स्थानीय लोग भी लाभान्वित होते है।
- **प्राकृतिक संसाधनों एवं वन्य जीव संरक्षणः–** वन्य जीवों के देखने के लिए आने वाले पर्यटकों से राजस्व मिलने के कारण, जानवरों का शिकार कम हो जाता है और उन्हें संरक्षित करने से प्रयास तेज हो जाते है। पर्यटन से होने वाली आय का उपयोग राष्ट्रीय उद्यानों, वन्य जीव अभयारणों और समुद्री पारिस्थितिक तंत्र के रखरखाव और संरक्षण के लिए किया जाता है।
- **सांस्कृतिक आदान–प्रदानः–**विभिन्न संस्कृतियों के लोगों के बीच संवाद से आपसी समझ और सम्मान बढ़ता है। स्थानीय कला परंपराओं और ऐतिहासिक स्थलों के प्रति रूचि बढ़ने से उनके संरक्षण को प्रोत्साहन मिलता है।

नकारात्मक प्रभावः–

- **पर्यावरणीय क्षतिः–**अत्यधिक पर्यटन से प्रदूषण (कूड़ा–कचरा), प्राकृतिक संसाधनों (जल, वन) की बर्बादी और वन्यजीवों के आवास को नुकसान पहुंचता है।
- **सांस्कृतिक पहचान का नुकसानः–**स्थनीय संस्कृति का व्यावसायीकरण होने से परंपराएं कमजोर हो सकती हैं और जीवनशैली पर विदेशी प्रभाव पड़ सकता है।
- **आर्थिक असमानता और मंहगाईः–**पर्यटन क्षेत्रों में आवास और वस्तुओं की कीमतें बढ़ जाती है, जिससे स्थानीय लोगों का जीवन स्तर प्रभावित हो सकता है।
- **भीड़ भाड़ और सामाजिक संषर्णः–**पर्यटकों की अत्यधिक भीड़ से स्थानीय लोगों की निजता में बाधा और संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

पर्यावरणीय प्रभावः–

- **कूड़ा–कचरा और प्लास्टिक प्रदूषणः–**पर्यटकों की संख्या बढ़ने से जलप्रपात और पिकनिक स्थलों के आसपास प्लास्टिक की बोतलें, पॉलीथिन और अन्य कचरा फैलने की संभावना रहती है, जिससे स्थानीय जैव विविधता होती है।

- **जल स्रोतों पर दबावः–**मऊगंज के शहर विकास योजना के अनुसार, वर्तमान में जिले में कोई कार्यात्मक जल शोधन संयंत्र या सीवेज ट्रीटमेंट सुविधा नहीं है। बढ़ते पर्यटन से जल स्रोतों पर दबाव और प्रदूषण का खतरा बढ़ सकता है।
- **मृदा अपरदनः–**जल प्रपातों के पास चट्टानी और ढलान वाले इलाकों में अनियंत्रित आवाजाही से मिट्टी का अपरदन हो सकता है।
- **ध्वनि और वायु प्रदूषणः–**पर्यटन स्थलों तक पहुँचने वाले वाहनों की बढ़ती संख्या प्राकृतिक शांति को भंग कर सकती है और वायु की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती है।

विकास में समस्याएं और संभावनाएं :–

मऊगंज जिले में पर्यटन विकास की अपार संभावनाएं हैं, लेकिन बहुती जलप्रपात, देवलहा जलप्रपात और देवतालाब जैसे प्रमुख स्थलों पर बुनियादी सुविधाओं का अभाव, असामाजिक तत्वों का जमावड़ा, जर्जर पर्यटक भवन और सुरक्षा की कमी मुख्य समस्याएं हैं। जिला बनने के बावजूद, खराब कनेक्टिविटी, प्रचार–प्रसार की कमी और विकास कार्यों की धीमी गति पर्यटन को उद्योग के रूप में विकसित होने से रोक रही है। आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय पहलुओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने के पश्चात इस क्षेत्र में सुधार के लिए कौन–कौन सी उपायों की आवश्यकता होगी, यह स्पष्ट होगा। पर्यटन जो आत्मनिर्भरता और आर्थिक समृद्धि का एक प्रमुख स्रोत है, विभिन्न क्षेत्रों में विकसित हो रहा है। इसके साथ ही पर्यटन का विकास स्थानीय समुदायों के लिए एक सकारात्मक प्रभाव डालने का क्षमता रखता है। मऊगंज जिला मध्य प्रदेश में स्थित एक ऐसा क्षेत्र है, जो प्राकृतिक सौंदर्य, सांस्कृतिक धरोहर और ऐतिहासिक स्थलों के लिए प्रसिद्ध है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य है, मऊगंज जिले में पर्यटन विकास की स्थिति, समस्याएं और संभावनाएं भौगोलिक दृष्टिकोण से जांचना है।

परिणाम एव सुझाव :–

मऊगंज जिले में टिकाऊ पर्यटन की आवश्यकता है। यदि विकास के साथ–साथ कचरा प्रबंधन और प्राकृतिक आवासों के संरक्षण पर ध्यान दिया जाए, तो पर्यटन यहाँ के पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना समृद्धि ला सकता है।

- **आधारभूत सुविधाओं का विकासः–**मऊगंज जिले के पर्यटन स्थलों तक बेहतर सड़क परिवहन की व्यवस्था, स्वच्छ पेयजल, शौचालय की व्यवस्था, पार्किंग एवं विश्राम स्थल विकसित किए जाएँ। साथ ही छोटे होटल, गेस्ट हाउस एवं होम–स्टे को बढ़ावा दिया जाए।

- **पर्यटन स्थलों का रखरखाव एवं सौंदर्यीकरणः–**जिले के ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थलों का संरक्षण किया जाए। प्राकृतिक स्थलों (जैसे–झरने, पहाड़, वन क्षेत्र) का पर्यावरण संतुलन बनाए रखते हुए विकास किया जाए। पर्यटन स्थलों की साफ–सफाई एवं हरित वातावरण बनाए रखने पर विशेष ध्यान दिया जाए।
- **प्रचार–प्रसारः–**मऊगंज जिले के पर्यटन स्थलों का प्रचार–प्रसार, सोशल मीडिया, वेबसाइट और पर्यटन मेलों के माध्यम से किया जाए। एवं जिले का एक पर्यटन मानचित्र तैयार किया जाए, जिससे पर्यटकों को आने में किसी प्रकार की समस्या न हो। स्थानीय त्योहारों और मेलों को पर्यटन आकर्षण के रूप में विकसित किया जाए।
- **स्थानीय लोगों की भागीदारीः–**स्थानीय युवाओं को गाइड, होटल प्रबंधन, हस्तशिल्प आदि में प्रशिक्षण दिया जाए। स्थानीय हस्तकला, खान–पान एवं संस्कृति को बढ़ावा दिया जाए। साथ ही ग्रामीण पर्यटन को प्रोत्साहित किया जाए।
- **सरकारी सहयोग एवं योजनाएँः–**निजी निवेश को आकर्षित करने के लिए प्रोत्साहन दिए जाएँ। राज्य एवं केन्द्र सरकार की योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए। सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत किया जाए ताकि पर्यटक सुरक्षित महसूस करें।
- **डिजिटल एवं स्मार्ट सुविधाएँः–**ऑनलाइन बुकिंग, जानकारी एवं गाइड सेवाएँ उपलब्ध कराई जाएँ। प्रमुख पर्यटन स्थलों पर वाई–फाई एवं डिजिटल सूचना केन्द्र स्थापित किए जाएँ।
- **पर्यावरण संरक्षणः–**प्लास्टिक उपयोग पर नियत्रंण एवं स्वच्छता अभियान चलाए जाएँ। और इको–टूरिज्म को बढ़ावा दिया जाए।

निष्कर्षः–

मऊगंज जिले में पर्यटन विकास की संभावनाएँ पर्याप्त रूप से विद्यमान है, परंतु वर्तमान में इनका पूर्ण रूप से दोहन नहीं हो पाया है। जिले में प्राकृतिक सुन्दरता, धार्मिक स्थल, ऐतिहासिक धरोहरें तथा ग्रामीण संस्कृति जैसे आकर्षण मौजूद हैं, जो पर्यटन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। पर्यटन विकास से न केवल आर्थिक वृद्धि होगी, बल्कि रोजगार के अवसरों में भी वृद्धि होगी, स्थानीय कला एवं संस्कृति का संरक्षण होगा तथा क्षेत्रीय विकास को भी गति मिलेगी। अतः मऊगंज जिले में पर्यटन के समग्र विकास हेतु योजनबद्ध और सतत प्रयास अत्यंत आवश्यक हैं। मऊगंज को प्रकृति प्रेमियों के लिए एक आदर्श माना जाता है, क्योंकि यहाँ के प्राकृतिक कुंड, झरने और हरे–भरे परिदृश्य पर्यटकों को आकर्षित करते है, वर्षा ऋतु में यहाँ का दृश्य अत्यंत मनोरम होता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यदि नवनिर्मित मऊगंज जिले में पर्यटन स्थलों का सुव्यस्थित विकास किया जाए, आधारभूत सुविधाओं (सड़क, परिवहन, आवास, स्वच्छता आदि) में सुधार किया जाए

तथा प्रभावी प्रचार–प्रसार किया जाए, तो यह जिला एक महत्वपूर्ण पर्यटन के रूप में उभर सकता है। साथ ही स्थानीय लोगों की सहभागिता और सरकार की योजनाओं का सही क्रियान्वयन पर्यटन उद्योग को सशक्त बना सकता है।

सन्दर्भ सूची :–

1. राव, बी.पी एवं श्रीवास्तव, व्ही.के 2006 पर्यावरण और पारिस्थितिकी बसुंधरा प्रकाशन गोरखरपुर।
2. ताज रावत (2002) पर्यटन विकास के विविध आयम, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. नेगी जगमोहन, पर्यटन मार्केटिंग एवं विकास तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली्।
4. कपूर, विमलकुमार (2009) पर्यटन भूगोल विश्वईभासी पब्लिकेशन नई दिल्ली।
5. सिंह, विवेक (2014) वन्य जीव क्षेत्र एवं पर्यटन एक भूपर्यावरणीय अध्ययन।
6. बी.एन पब्लिकेशन्स पर्यटन, परिवहन और यात्रा सेवाऐं।
7. सिंह, बी.पी एवं सिंह, सुमंत (1999) का पर्यावरणीय विविधताएं एवं पर्यटन।
8. सिंह,बी.पी.(2004) म.प्र.में पर्यटन विकास समस्यायए एवं सम्भावनाएं।
9. प्रजापति, शिवमूर्ति, वन्य जीव क्षेत्र एवं पर्यटन विन्ध्य प्रदेश का एक भौगोलिक अध्ययन।